कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



प्रश्न 1. कृषि इतिहास लिखने के लिए आइन को स्रोत के रूप में इस्तेमाल करने में कौन सी समस्याएँ हैं? इतिहासकार इन समस्याओं से कैसे निपटते हैं?

उत्तर : आइन में कृषि इतिहास के सन्दर्भ में संख्यात्मक आँकड़ों की दृष्टि से विषमताएँ पाई गई हैं।

- सभी सूबों से आँकड़े एक ही शक्ल में नहीं एकत्रित किए गए।
- मसलन, जहाँ कई सूबों के लिए जमींदारों की जाति के बारे में विस्तृत सूचनाएँ संकलित की गईं, वहीं बंगाल और उड़ीसा के लिए ऐसी सूचनाएँ मौजूद नहीं हैं।
- इसी तरह, जहाँ सूबों से लिए गए राजकोषीय आँकड़े बड़ी तफसील से दिए गए हैं, वहीं उन्हीं इलाकों से कीमतों और मजदूरी जैसे इतने ही महत्त्वपूर्ण मापदंड इतने अच्छे से दर्ज नहीं किए गए हैं।
- कीमतों और मजदूरी की दरों की जो विस्तृत सूची आइन में दी गई है, वह साम्राज्य की राजधानी आगरा या उसके इर्द गिर्द के इलाकों से ली गई है। जाहिर है कि देश के बाकी हिस्सों के लिए इन आँकड़ों की प्रासंगिकता सीमित है।
- इतिहासकार आमतौर पर यह मानते हैं कि इस तरह की समस्याएँ तब आती हैं जब व्यापक स्तर पर इतिहास लिखा जाता है।
- आँकड़ों के संग्रह की अधिकता से छोटी-मोटी चूक होना आम बात है और इससे किताबों के आँकड़ों की सच्चाई को कम करके नहीं आँका जा सकता।

प्रश्न 2. सोलहवीं-सत्रहवीं सदी में कृषि उत्पादन को किस हद तक महज़ गुज़ारे के लिए खेती कह सकते हैं? अपने उत्तर के कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 16वीं-17वीं सदी में दैनिक आहार की खेती पर ज्यादा जोर दिया जाता था, लेकिन इसका यह मतलब नहीं था कि उस काल में खेती केवल गुजारा करने के लिए की जाती थी।

- तत्कालीन स्रोतों में जिन्स-ए-कामिल अर्थात् सर्वोत्तम फसलें जैसे लफ्ज मिलते हैं। मुगल राज्य किसानों को ऐसी फसलों को खेती करने के लिए बढ़ावा देता था, क्योंकि इनसे राज्य को ज्यादा कर

Download Mission Gyan App
LET'S LEARN TOGETHER
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

मिलता था।

- कपास और गन्ने जैसी फसलें बेहतरीन जिन्स-ए-कामिल थीं। तिलहन और दलहन भी नकदी फसलों के अंतर्गत आती थीं।
- इससे पता चलता है कि एक औसत किसान की जमीन पर किस तरह पेट भरने के लिए होने वाले उत्पादन और व्यापार के लिए किए जाने वाले उत्पादन एक-दूसरे से जुड़े थे।

प्रश्न 3. कृषि उत्पादन में महिलाओं की भूमिका का विवरण दीजिए।

उत्तर : मध्यकालीन भारतीय कृषि समाज में उत्पादन प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी। खेतिहर अर्थात् किसान परिवारों से संबंधित महिलाएँ कृषि उत्पादन में सक्रिय सहयोग प्रदान करती थीं तथा पुरुषों के कन्धे-से- कन्धा मिलाकर खेतों में काम करती थीं।

- पुरुष खेतों की जुताई और हल चलाने का काम करते थे। महिलाएँ मुख्य रूप में बुआई, निराई तथा कटाई का काम करती थीं और पकी हुई फसल का दाना निकालने में भी सहयोग प्रदान करती थीं।
- अत: महिलाओं और पुरुषों के कार्य क्षेत्र में एक विभाजक रेखा खींचना (अर्थात् घर के लिए महिला और बाहर के लिए पुरुष) कठिन हो गया था।
- किसान और दस्तकार महिलाएँ न केवल खेती में सहयोग प्रदान करती थीं अपितु आवश्यकता होने पर नियोक्ताओं के घरों में भी काम करती थीं और अपने उत्पादन को बेचने के लिए बाजारों में भी जाती थीं।
- जैव-वैज्ञानिक क्रियाओं से संबंधित पूर्वाग्रह अब भी विद्यमान थे। उदाहरण के लिए, पश्चिमी भारत में राजस्वला (मासिक-धर्म) महिलाएँ हल अथवा कुम्हार के चाक को नहीं छू सकती थीं।
  इसी प्रकार बंगाल में महिलाओं को मासिक- धर्म की अवधि में पान बागानों में जाने की मनाही थी।

प्रश्न 4. विचाराधीन काल में मौद्रिक कारोबार की अहमियत की विवेचना उदाहरण देकर कीजिए।

उत्तर : 16वीं और 17वीं शताब्दियों में कृषि अर्थव्यवस्था में मौद्रिकीकरण का उल्लेखनीय विस्तार हुआ और वस्तु विनिमय पर आधारित अर्थव्यवस्था का स्थान मुद्रा अर्थव्यवस्था ने ले लिया।

- मुगल सम्राटों की वित्तीय एवं आर्थिक नीतियों के कारण साम्राज्य में मुद्रा का संचरण बढ़ने लगा।
- मुगल सम्राटों की राजस्व नीति ने मुद्रा अर्थव्यवस्था की संवृद्धि में विशेष रूप से योगदान दिया।
- 16वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में ही राज्य द्वारा किसानों को यह छूट दे दी गई कि वे भू-राजस्व का भुगतान नकद अथवा जिन्स के रूप में कर सकते थे।
- इस सुविधा के परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था में मौद्रिक कारोबार के महत्त्व में वृद्धि होने लगी।
- विचाराधीन काल में ग्रामों और शहरों के मध्य होने वाले व्यापार के परिणामस्वरूप ग्रामों के कारोबार

Download Mission Gyan App
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

में भी मौद्रिकीकरण का महत्त्व बढ़ने लगा था।

- ग्राम समुदाय महाजनों और बनजारों के माध्यम से कस्बों और शहरों को अनाज भेजते थे। इस प्रकार ग्रामों में पैसा वापस आ जाता था।
- मुगल साम्राज्य के केन्द्रीय क्षेत्रों में कर की गणना और वसूली भी नकद रूप में की जाती थी।
- किसान सुविधा एवं इच्छानुसार अनाज अथवा नकद रूप में भू-राजस्व का भुगतान कर सकते थे, किन्तु राज्य नकद रूप में भू-राजस्व प्राप्त करना अधिक अच्छा समझता था।
- निर्यात के लिए उत्पादन करने वाले दस्तकारों को भी उनकी मजदूरी का भुगतान नकद रूप में ही किया जाता था।
- व्यावसायिक फसलों के उत्पादन ने भी मौद्रिक कारोबार में वृद्धि की। कपास, रेशम अथवा नील जैसी फसलें पैदा करने वाले अपनी फसलों का भुगतान नकदी में ही प्राप्त करते थे।
- जमींदारियों के विस्तार ने भी मौद्रिकीकरण के विकास को बढ़ावा दिया।
- जमींदारियों के क्रय-विक्रय ने ग्रामों में मौद्रिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र बनाया। जमींदार किसानों से राजस्व की माँग नकद रूप में करते थे।

प्रश्न 5. उन सूबतों की जाँच कीजिए जो ये सुझाते हैं कि मुग़ल राजकोषीय व्यवस्था के लिए भू-राजस्व बहुत महत्त्वपूर्ण था।

उत्तर : 'वित्त' साम्राज्य रूपी शरीर का मेरुदंड होता है। अत: लगभग सभी मुगल सम्राट साम्राज्य को सुदृढ़ वित्तीय आधार प्रदान करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे।

- जजिया, जकात, खम्स, खिराज, व्यापार, अधीन राजाओं और मनसबदारों से समय-समय पर प्राप्त होने वाले उपहार, विभिन्न प्रकार की चुगियाँ आदि राज्य की आय के अनेक साधन थे।
- इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान भू-राजस्व का था। भू-राजस्व ही साम्राज्य की आर्थिक बुनियाद का आधार था।
- दीवान अथवा वित्त मंत्री, संपूर्ण राज्य की वित्तीय व्यवस्था की देख-रेख के लिए उत्तरदायी था, वित्त के साथ-साथ राजस्व विभाग भी उसी के नियंत्रण में था।
- लोगों पर कर का भार निर्धारित करने से पहले मुगल राज्य ने जमीन और उस पर होने वाले उत्पादन के विषय में विशेष सूचनाएँ इकट्ठा करने का प्रयास किया जाता था।
- अकबर प्रथम मुगल सम्राट था, जिसने भू-राजस्व व्यवस्था को सुचारू रूप से व्यवस्थित किया और मध्ययुग की सर्वोत्तम भू-राजस्व प्रणाली का निर्माण किया।

Download Mission Cyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

भूमि का वर्गीकरण- पैमाइश के बाद काश्त की निरंतरता के आधार पर समस्त भूमि को पोलज, परौती, चचर और बंजर इन चार भागों में विभक्त कर दिया गया।

- पोलज सर्वाधिक उपजाऊ भूमि थी जिस पर सदैव काश्त होती थी।
- परौती अपेक्षाकृत कम उपजाऊ थी। दो-तीन वर्ष तक निरंतर खेती करने के उपरांत इसे एकाध वर्ष के लिए परती (खाली) छोड़ दिया जाता था।
- चचर भूमि को एक फसल के बाद पुनः उर्वरा शक्ति प्राप्त करने के लिए तीन-चार वर्ष के लिए खाली छोड़ना पड़ता था।

राज्य का भाग निश्चित करना :-

कर निर्धारण और वास्तविक वसूली मुगल भू-राजस्व प्रबन्ध के दो महत्त्वपूर्ण चरण थे।

- वास्तविक वसूली अर्थात् वास्तव में वसूल की जाने वाली रकम हासिल के नाम से जानी जाती थी।
- किंतु स्थानीय परिस्थितियों के कारण कभी-कभी वास्तव में इतनी वसूली नहीं हो पाती थी, इसलिए जमा और हासिल में काफी अंतर हो जाता था।
- 'पोलज' और 'परौती' श्रेणियों की भूमि से राज्य उपज का 1/3 भाग भू-राजस्व के रूप में लेता था।
- भूमि-कर वर्ष में दो बार (पहली बार रबी की फसल और दूसरी बार खरीफ की फसल पकने पर) सीधे किसानों से वसूल किया जाता था।
- सरकार की ओर से किसान को 'पट्टा' नामक एक पत्र दिया जाता था और किसान 'कबूलियतनामा' पर हस्ताक्षर करके सरकार को देता था।
- भू-राजस्व प्रबंध के संबंध में उठाए गए इन कदमों से यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि मुगल राजकोषीय व्यवस्था के लिए भू- राजस्व अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here